पायरेसी आपकी दोस्त है

जैरोन लैनियर

पायरेसी एक हौआ है जिसे रेकॉर्ड बनाने वाली कम्पनियां सिर्फ़ कलाकारों का ख़ून चूसने के लिए खड़ा करती हैं। जालसाज़ी हमेशा से होती रही है। किसी भी बड़े इलेक्ट्रॉनिक स्टोर में जो ढेर के ढेर कोरे कैसेट पड़े रहते हैं वे यूं ही नहीं हैं।

जब लोग आपके संगीत को कॉपी करने की बजाय ख़रीदते है तो ऐसा करने के पीछे उनके पास कई कारण होते हैं। शायद उनके लिए नैतिकता का सवाल हो। हो सकता है वह किसी चीज़ को कॉपी करने में पेश आने वाले झंझटों से बचना चाहते हों — मसलन संगीत ठीक से कॉपी हो पाएगा या नहीं? पूरा का पूरा कैसेट हुआ या नहीं? ये भी संभव है कि वे ख़रीद कर आपके प्रति अपनी सद्भावना व्यक्त कर रहे हों।

मगर इस बात को अच्छी तरह समझ लीजिए कि यदि आपका संगीत किसी भी तरह मुफ़्त उपलब्ध नहीं हुआ होता तो कोई भी व्यक्ति उसे नहीं सुन पाता और नतीजतन उसे ख़रीदने का फ़ैसला भी नहीं कर पाता। **'मुफ़्त'** संगीत का पुराना रूप रेडियो (जिसे जालसाज़ अकसर टेप कर लेते हैं) और एमटीवी था। पर अब आख़िरकार इंटरनेट इन सब पर छा जाएगा। टीवी और रेडियो तो रहेंगे पर उन्हें चलाया जाएगा डिजिटल तकनीक के ज़रिए ही। बस 10 साल और इंतज़ार कीजिए। जिस दिन ऐसा हो जाएगा उसके बाद अपने संगीत को मुफ़्त में न देने का मतलब होगा कि आप अपने संगीत का प्रचार बिल्कुल नहीं चाहते हैं।

यहां असल सवाल यह नहीं होना चाहिए कि ''मैं अपने चाहने वालों को अपने संगीत को मुफ़्त में न सुनने से रोकूं?'' बल्कि आपका सवाल यह होना चाहिए कि ''मैं अपने चाहने वालों के ज़रिए ज़्यादा से ज़्यादा पैसा कैसे बना सकता हूं?'' — ये दोनों बिल्कुल जुदा सवाल हैं। बिला शक, जालसाज़ों की वजह से आपको आर्थिक नुक़सान होता है। पर आपको नुक़सान उस रेकॉर्ड कम्पनी से भी तो होता ही है जो आपको कोई फ़ायदा नहीं पहुंचाती।

एक ज़माना था जब अपने संगीत के लिए पैसे का इंतज़ाम करने, उसे तैयार करने, रख-रखाव करने, लदवाने और बेचने के लिए आपको रेकॉर्ड कम्पनी की ज़रूरत पड़ती थी। वे इसी तरह पैसा बनाती थीं। इस बंदोबस्त का अपना एक मतलब था। यदि संगीत का बाज़ार हमारी आंखों के ऐन सामने सिकुड़ नहीं रहा होता तो बेशक इसे आज भी कारगर माना जाता।

पर आज के डिजिटल युग में, अपने संगीत को अपने किसी श्रोता तक पहुंचाने के लिए उसे परिवहन की कोई ज़रूरत नहीं है। न पैसे का ख़र्च, न वक़्त की बर्बादी। रेकॉर्ड कम्पनियों की मौजूदगी की सबसे बड़ी वजह ही नहीं रही।

जहां तक फ़ाइनांस का सवाल है, तो अगर फ़ाइनांस समझौते के एवज़ में दूसरे उद्योगों में पेशगी धन इकट्ठा कर लिया गया है तो यह फ़ाइनांसिंग सूदख़ोरी जैसी ही है – सिवाय इसके कि आप उसे क़र्ज़ नहीं कह सकते क्योंकि फ़ाइनांगिस की राशि वसूल हो जाने के बाद भी आपके संगीत की मूल या मास्टर कॉपी आपकी रेकॉर्ड कम्पनी के पास ही रहती है। फाइनांसिंग में इससे भ्रष्ट चलन की कल्पना करना भी कठिन है। इसकी बजाय यदि हम अपने करियर की ज़िम्मेदारी ख़ुद संभाल लें तो हमारी स्थिति कहीं बेहतर हो सकती है।

अगला सवाल – मार्केटिंग का क्या होगा? क्या लेबल अभी-भी मार्केटिंग करने में सक्षम हैं? जी हां, चंद बड़े कामों के लिए वे अभी भी उपयोगी हैं। पर एक बार आप के पैर जम जाएं तो उसके बाद रेकॉर्ड कम्पनी के मुक़ाबले आपकी अपनी वेबसाइट आपको आपके प्रशंसकों के साथ कहीं बेहतर तरीक़े से जोड़ सकती है।

यदि आप बहुत नामी गिरामी कलाकार हैं तो भी कुछ सालों के लिहाज़ से नहीं बल्कि अपने पूरे करियर के नज़रिए से सोच कर देखिए कि आपका ज़्यादा पैसा जालसाज़ों की जेब में जाता है या उन रेकॉर्ड कम्पनियों की, जो बिला वजह आपका बेहिसाब पैसा हज़म कर जाते हैं?

जब कोई आदमी अपने बंद कमरे में बैठकर हज़ारों डॉलर के उपकरण ख़रीदकर पूरी रात आपका संगीत 'मुफ़्त' हासिल करने के लिए एमपी3 की हैकिंग करने में काट देता है तो यह आपके लिए एक और सुनहरा मौका है न कि समस्या। यह इस बात का संकेत है कि आपको उन्मत्त प्रशंसकों की एक और पीढ़ी मिल गई है। एकमात्र समस्या यही है कि फ़िलवक़्त संगीतकारों की जगह कम्प्यूटर कम्पनियां पैसा बना रही हैं।

रेकॉर्ड कम्पनियां जालसाज़ी को नहीं रोक सकतीं। कोई नहीं रोक सकता। कम्प्यूटर के बारे में मैं भी उतना ही जानता हूं जितना पृथ्वी पर कोई और जानता होगा और मेरा दावा है कि रेकॉर्ड कम्पनी वाले अपने संगीत की नक़ल को रोकने के कैसे भी नुस्ख़े लेकर क्यों न आ जाएं, उन्हें बच्चे भी तोड़ देंगे। पूरा कम्प्यूटर और संगीत उद्योग इस बात से अच्छी तरह वाक़िफ़ है।

दरअसल संगीत को कॉपी करना जितना ज़्यादा आसान होगा जालसाज़ी का ख़तरा उतना ही कम होगा। जब जालसाज़ी आसान हो जाएगी तो पेशेवर जालसाज़ों की महारत बेमानी हो जाएगी। तब एकमात्र जालसाज़ संगीतकार के प्रशंसक ही होंगे। फिर अपने चाहने वालों से पैसा बनाने के तो ढेरों तरीक़े हैं।

रेकॉर्डिंग इंडस्ट्री एसोसिएशन ऑफ़ अमेरिका और विभिन्न रेकॉर्ड कम्पनियां जालसाज़ी-विरोधी क़ानूनों और तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए जो ज़ोर लगा रही हैं उसका जालसाज़ी रोकने से कोई लेना-देना नहीं हैं। वे ऐसा इसलिए कर रही हैं ताकि नए डिजिटल संगीत चैनलों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर सकें। ताकि किसी भी दूसरे व्यक्ति को, जैसे आपको, सत्ता में भागीदारी करने से वंचित रख सकें।

वे आपको लूटने का सामान जुटा रहे हैं। बस।

'मुक्त' डिजिटल संगीत के दौर में आप कहीं ज़्यादा पैसा बना सकते हैं। पर ऐसा तभी संभव होगा जब आप ब्रैंड, लेबल और कम्पनी की नियंत्रणवादी मानसिकता से आज़ाद होंगे।

अनुवादः योगेन्द्र दत्त